धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जून 2009

भगवान देवात्मा का भौतिक जगत के साथ सम्बन्ध

उल्टी दृष्टि

देवात्मा की रोशनी में

ईर्ष्या एक रोग है।

मज़हब ही सिखाता है, आपस में बैर करना

श्रीमान पं० परमेश्वर दत्त जी विशारद

समाज सुधार की हिंसा

शुभ संग्राम

भगवान देवात्मा का भौतिक जगत के साथ सम्बन्ध

मनुष्यात्मा स्वार्थ परायण प्रकृति रखने के कारण लापरवाही और महाअबोधता की हालत में जड़ पदार्थों के साथ भी दुर्व्यवहार करके विविध अंगों में हानिकारक प्रमाणित हो रहा है।

परन्तु परम पूजनीय भगवान देवात्मा जड़ जगत् के किसी पदार्थ की भी अनुचित हानि से बहुत दुख पाते रहे हैं। चुनांचि इस विषय में "जीवन कथायें प्रथम भाग" नामी पुस्तक में एक कर्मचारी ने इस प्रकार वर्णन किया :-

"कुछ काल हुआ, कि भगवान देवात्मा के रसोई घर के साथ की एक कोठड़ी में छत वाली लोहे की पट्टियों पर तारकोल लगाया जा रहा था, और उस की देखभाल मेरे जिम्मे थी। तारकोल लगाने वाले ने ऊपर से मोटी-मोटी बूंदों को गिराकर फर्श को खराब कर दिया, परन्तु इस से न तो तारकोल के लगाने वाले को और न मुझे कोई कष्ट अनुभव हुआ। इतने में पूजनीय भगवान वहां तशरीफ ले आए। उन्होंने फर्श की इस बुरी शकल को देखते ही अपने हृदय में सख़्त आघात लाभ किया और उस से बिलबिलाकर अपने गहरे दुख का प्रकाश किया। उनका हृदय फर्श की इस अनुचित हानि से बहुत तकलीफ पा रहा; था। उन्होंने तत्काल यह उपदेश दिया, कि सत्य धर्म की शिक्षा के अनुसार मनुष्य के लिए नेचर के किसी अजीवित वा जीवित अस्तित्वों को अनुचित हानि पहुंचाना ठीक नहीं। ऐसा करने से कर्ता के आत्मिक जीवन की हानि होती है। इसीलिए प्रत्येक जगत् के सम्बन्ध में चलने के लिए आत्मा को नाना प्रकार के उच्च बोधों के लाभ करने की आवश्यकता है।

मैं उस समय एक तरफ अपने हीन अवस्था को देख रहा था और मैं दूसरी तरफ भगवान देवात्मा की असीम महिमा को उपलब्ध करता था।"

नेचर के सब जगतों के सम्बन्ध में भगवान देवात्मा के इसी प्रकार के अनुचित हानि से मोक्ष दायक और सब प्रकार के शुभ उत्पादक महान उच्च भाव उन्हें औरों के उद्धार और हित के लिए सदा व्याकुल और संग्राम की अवस्था में रखते थे। यह सब लक्ष्ण उनकी अद्वितीय देवशक्तियों से स्वयं प्रगट होते हैं, और इन्हीं अद्वितीय शक्तियों को प्राप्त होकर वह अद्वितीय देव जीवनधारी हमारे परम पूजनीय हैं। उनकी इच्छा के अनुसार उसी समय उस फर्श के वह सब बुरे धब्बे मिटाए गए, और फर्श साफ कर दिया गया।

वाह! परम पूजनीय भगवान का देवरूप किस कदर महान और सर्वांगङ कल्याण कर्ता!! काश! कि हम लोग उन से उच्च भावों द्वारा जुड़कर जहां उनके देव प्रभावों को अधिक से अधिक मात्रा में लाभ कर सकें, वहां अपने नाना सम्बन्धों में बोधी बनकर अधिक से अधिक सेवाकारी प्रमाणित हो सकें, और अपने गुरु के सच्चे सेवक प्रमाणित हो सकें।

धर्म जीवन

खण्ड 21 अंक 6

जून 2009

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

उल्टी दृष्टि

पंजाब में एक शराबी की कहानी प्रसिद्ध है। वह शराब के नशे में चूर था। रात के समय महाराजा रणजीत सिंह जी हाथी पर सवार वहां से गुजरे। जब शराबी ने हाथी पर सवार महाराजा को देखा तो वह उनको सम्बोधन करके बोला, "भाई कट्टे (भैंसा का बच्चा) वाले इस कट्टे का क्या मोल लेना है?" महाराजा के सामने ऐसी गुस्ताखी करने वाले को पकड़ लिया गया और अगले दिन महाराजा के सामने उसे पेश किया गया। उस समय नशा उतर चुका था। वह महाराजा की वास्तव पोजीशन को देख रहा था अपनी कंगाल हालत को भी जानने के योग्य था और वह महाराजा की तुलना में अपने आपको हीन और गरीब देख रहा था। महाराजा ने उससे पूछा कि भाई कट्टा खरीदना है। शराबी हाथ बांधकर क्षमा मांगता हुआ कहने लगा, "हजूर रात वाले व्यापारी तो लद गए।"

यह कहानी बताती है कि जब शराब का नशा सवार था, तो उस जन की दृष्टि सही नहीं थी, उसने अपनी नशे की हालत में निम्नलिखित गल्त बातें देखी।

1) उसने हाथी जो ऊंचा, लम्बा जानवर है, एक भैंस के बच्चे की तरह देखा, उसे उसके और हाथी के डील डौल में कोई फर्क़ नज़र नहीं आया।

2) उसको हाथी पर सवार, हीरे मोतियों से सजे हुए महाराज, जिनकी जय जयकार हो रही थी, जिसको सलाम मारने के लिए लोग झुक रहे थे, वह महाराज दिखाई नहीं दिए, उल्टा हाथी पर सवार एक कट्टा बेचने वाला दिखाई दिया।

3) उसे अपना आप एक व्यापारी नज़र आया, जबकि वह न व्यापारी था और न उसने कुछ खरीदना था।

नशे के आवेश ने एक शराबी की नज़र किस प्रकार दूषित और अन्धकारमय कर दी। जब वह नशा उतरा तो उसकी दृष्टी सही हो गई।

जैसे नशे का आवेश मनुष्य की दृष्टि को प्रभावित करता है, इसी प्रकार मनुष्य के भावों वा अनुरागों के आवेश मनुष्य को आन्तरिक रूप से प्रभावित करते हैं। वह न केवल उसे ठीक नहीं रहने देते, बल्कि उसे उल्टा दिखाई देने लगता है। मनुष्य का अंह अनुराग, अपने आपका प्यार (Self love) मनुष्य की दृष्टि को बहुत प्रबल रूप से प्रभावित करता है और उसे सब कुछ उल्टा दिखाई देता है।

'मैं' के अनुराग का, अपनत्व के प्यार का, "अंह" के अनुराग का आवेश भी नशे के आवेश जैसा ही होता है। नशे का आवेश तो 5 - 7 घण्टे में उतर

जाता है, परन्तु अंह का आवेश तो न केवल उतरता ही नहीं बल्कि उमर के साथ दिन दुगना, रात चौगना बढ़ता ही जाता है। जैसे नशे के आवेश में मनुष्य की दृष्टि दूषित हो जाती है, उसी प्रकार अंह के नशे में न केवल मनुष्य अपनी औकात नहीं देख सकता बल्कि दूसरों के ठीक देखने में भी असमर्थ्य हो जाता है।

अंह को सौ मुंह वाला राक्षस कहा जाता है। अंह वा स्वै-प्यार का बहुत बड़ा परिवार है। अंह का सबसे प्यारा पुत्र वा प्रतिनिधि घमंड है। फिर गुस्सा या नीच घृणा, स्वार्थ, स्वेच्छाचारिता, ईर्षा द्वेष है, मान सम्मान है, प्रशंसा, बड़ाई वा लोक लाज है।

घमंड का अधिकार सब मनुष्य जाति पर है। इससे कोई मुक्त नहीं। सब बड़े छोटे, पीर गुरु इससे प्रभावित हैं, सब पर यह नशा सवार रहता है, केवल डिगरियों का अन्तर है।

घमंड का अधिकार मनुष्य को अपना आप अच्छा ही अच्छा और ठीक ही ठीक दिखाता है। वह मनुष्य का ध्यान उसके अपने दोषों की ओर ले जाने नहीं देता। वह अपने आपको प्रकृत रूप में देखने नहीं देता। प्रत्येक मनुष्य को अपना आप बढ़िया, निर्दोष और सुन्दर देखने में ही सुख मिलता है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य वर्षो के वर्ष अपने आपको बढ़िया और निर्दोष देखते देखते वैसा ही विश्वास करने लगता है। यह विश्वास मिथ्या होता है और अपने प्रति बढ़िया वा महान देखने का मिथ्या विश्वास ही घमंड होता है, जिसका मनुष्य ग्रास होता है।

घमंड के कारण मनुष्य अपनी कीमत कई गुणा बढ़ा चढ़ाकर लगाता है। पागलख़ाने के मरीज़, गरीब, पागल होकर भी अपने आपको राजा, नवाब, सरदार, हाकिम, अफसर या बड़े अमीर समझते वा विश्वास करते हैं। अपने विश्वास के अनुसार ही लोगों के सामने अपने आपको पेश करते हैं।

फिर अपनी महानता का दूसरों से रिस्पौंस भी चाहते हैं, जब वह प्राप्त नहीं होता, तो दूसरों को दोषी वा अपराधी समझने लगते हैं। उसने कथन पर विश्वास न करने पर बिना मतलब अपनी कल्पित कचहरी के भीतर दूसरों को कसूरवार करार दे देते हैं।

घमंडी मनुष्य इसी प्रकार झूठ और मिथ्या का शिकार हो जाता है। वह सत्य के विरुद्ध चलता है और उसकी दृष्टि भी सही नहीं हो सकती।

घमंड अपने से बड़े, गुणवान वा महान मनुष्य को न केवल देखने नहीं देता, बल्कि उसे कई प्रकार से नीच बताकर अपमानित करता रहता है। न वह अपने को ठीक देखता है और न दूसरों को ही वास्तव रूप में देखता है।

कोई उससे योग्य है, गुणवान है, सफल है, उसको कुछ नज़र नहीं आता। यहां तक कि कोई उसका भला चाहने वाला है वह नज़र नहीं आता उल्टा जो उसे बर्बाद करने वाला है, वह अपना हितकारी नज़र आता है।

बच्चे ज्यों-ज्यों जवान होते हैं, उमर के साथ घमंड भी जवान होने लगता है। उसके माता पिता जब किसी गल्त बात से टोकते हैं, या पाबन्दी लगाते हैं तो वह शत्रु नज़र आने लगते हैं। अध्यापिक जो उससे अधिक पढ़े है और उसके भविष्य निर्माता हैं, उनका वह रूप उसे नज़र नहीं आता, उल्टा उनको अपमानित करके वह खुश होता है और ऐसा करके अपने उपकारियों पर अनर्थ करता है। उनसे टकराहट में आता है। वह दोस्त मित्र जो उसे तबाही की ओर ले जाता है, वह अपना सच्चा मित्र नज़र आता हैं। इसलिए अपने हितकारियों के साथ टकराहट में आता है।

घरों, परिवारों, समाजिक संगठनों के भीतर टकराहट का बड़ा कारण यही उल्टी दृष्टि है। जिस

प्रकार लाखों विद्यार्थी अपने अध्यापकों को तुच्छ देखकर उनसे कोई लाभ नहीं उठाते, उल्टा अपना कैरीयर बर्बाद कर लेते हैं, वैसे ही लाखों इन्सान अपने से गुणवान, महान वा उच्च आत्माओं को न केवल देखते नहीं बल्कि उनका अनादर करते हैं, श्रद्धा वा सम्मान रखने के स्थान पर निन्दक बन जाते हैं। उनको घटिया और अपने आपको बढ़िया समझकर जीवन के विचार से महा हानि उठाते हैं।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा जो लासानी शक्तियां लेकर विकास क्रम में आर्विभूत हुए हैं, जो शिरोमणी हैं, उनको जानना, पहचानना वा उनके रूप को देखना तो मनुष्य के लिए असम्भव के लगभग है। इसलिए उनको उल्टे रूप में देखकर उन्हें तरह - तरह से सताया और तड़पाया गया है। इसलिए देवात्मा ने फरमाया है कि "मैं अज्ञात हूँ, मैं अनाद्रित हूँ।"

मनुष्य का घमंड उसे उल्टा दृष्टा बना देता है और आप नीच सुख अनुरागी होकर देवात्मा के आद्वितीय रूप को नहीं पहचान सकता। उनकी शरण में आकर भी, लाभ उठाकर भी अपने घमंड पर चोट लगने से उसे सब कुछ उल्टा, घटिया दिखने लगता है और अपना आप बढ़िया दिखने लगता। इसकी जीवन्त उदाहरणें देव समाज के इतिहास में हैं कि उच्च चोटी पर पहुँचकर भी एक - एक जन इस नामुराद घमंड के अधीन होकर उच्च सूत्रों से कट गया और अपना जीवन बर्बाद कर लिया।

अवश्यकता है कि अंह अनुराग जो मनुष्य का सबसे शत्रु है, उसे कुछ जान सकें और उसके अधिकार से बचने का प्रयत्न की सकें और अपनी दृष्टि को सही कर सकें।

बलदेव सिंह

देवात्मा की रोशनी में

मेरे पूजनीय भगवन! मैं आपकी मुबारक रोशनी में देखता हूँ और ऐसा कोई कारण नज़र नहीं आता कि जिसके कारण मैं अपने आपको इतना बड़ा और दूसरों को इस कदर तुच्छ समझूं। मैं अपने भीतर इस कदर झूठ और बुराई को देखता हूँ कि सचमुच मैं आंख उठाकर देखने के योग्य नहीं हूं। मेरे भीतर जो कुछ भी है, वह मेरे शर्मिंदा होने के लिए काफी है। और अपने आपको सुधारने की ही इतनी अवश्यकता है कि न तो मेरे पास इतना समय है और न मेरा इस ओर झुकाव है कि दूसरों की फटी हुई जेबें तलाशता फिरूं।

सर्वप्रथम मेरी इस विश्व में क्या हस्ती है? मैं इतना महत्वहीन और मेरी हस्ती इतनी तुच्छ है कि शेखचिल्ली की तरह शेखी मारने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं दूसरा जो कुछ भी मैं हूँ, वह उपकारियों की देन है, तो मेरी हस्ती तो न होने के बराबर है। तीसरा मैं जो कुछ भी हूँ, वह इतना नीच और घटिया हूँ, उसके कारण मैं अपने आप से ही शर्मिंदा हूँ। मैं अपने सम्बन्ध में ईमानदारी से यदि कुछ कह सकता हूँ तो यही कि मैं तबाही लाने वाला वजूद हूं।

परन्तु मेरा अपने वजूद के प्रति प्यार मुझे यह सचाई देखने से अन्धा कर देता है। इस प्यार के कारण मैं अपने बदकिस्मत अस्तित्व की प्रशंसा में तो असमान छूने के दर्जे तक जाता हूँ, परन्तु हर खुशकिस्मत और महान हस्ती को हीन से हीन समझता हूँ। मैंने सदा अपनी झूठी कीमत लगाई है। सदा अपने आपको धोखे में रखता हूँ, अपने बारे में ऐसा सोचते - सोचते

सचमुच ही यह समझने लगता हूँ कि मैं ऐसा उच्च वजूद हूँ। दूसरों को सदा घटिया दर्जा दिए रखता हूँ।

मैं देखता हूँ कि मेरी हर सफलता को जो आपके कारण होती है, अपने साथ जोड़कर धोखे में रहता हूँ। मैं अन्धा हो जाता हूँ कि इस महान काम में मेरा योगदान केवल एक औज़ार की तरह है। महान आत्माओं की मंगल कामनाओं और महान परोपकारियों के दान इकटठा करने में सहायता के कारण मैं इतना दान इकटठा कर सका हूँ। मैं केवल तरखान के हाथ में एक औज़ार की तरह हूँ। मैं अब यह देख रहा हूँ कि जिन्दा तरखान को महत्व न देकर बेज़ान औज़ार की प्रशंसा कर रहा हूँ। यह कितनी बड़ी मूर्खता है पर हमें अपने प्रति यह इतना बड़ा झूठ भी नज़र नहीं आता, यही हाल मेरा है।

घृणा का ज़हर जो मेरा घमंड मेरे भीतर पैदा करता है, मुझे दूसरों के गुणों के प्रति उदासीन होने के लिए मजबूर करता है। यह मेरे भीतर आत्मिक अन्धता पैदा करता है। मैं न गुणवानों को देख सकता हूँ न ही उनकी खुशी प्राप्त कर सकता हूँ। मैं सदा ही दूसरों की जेबों में छेदें ढूंडने में तत्पर रहता हूँ। कितनी भयानक आदत! मैं बेशर्मी की सीमा तक कंजूस हूँ, मैं बहुत छोटे दिल का इंसान हूँ, दूसरों की प्रशंसा करने में मेरा गला रूक जाता है।

मैं समझने में असमर्थ्य हूँ कि जिस प्रकार बहुत सारे साथी दूसरों की प्रशंसा करते है, पर मैं दूसरों के गुणों की तारीफ करने में बहुत बड़ी कमज़ोरी समझता हूँ। मैं ऐसे तारीफ करने वालों को चापलूस समझता हूँ। मैं दिमागी और रूहानी पीलिया का मरीज़ हूँ, जो प्रत्येक वस्तु ठीक रूप में नहीं देख सकता। मैं श्रद्धा को वा गुण देखने को कुछ नहीं समझता, उल्टा ऐसे गुण देखने वालों को चापलूस समझकर हीन समझता हूँ, कैसा पागलपन!

मेरा अंह बहुत बढ़ चुका है, प्रत्येक चीज़ इस लहर में बहती नज़र आती है। कोई रिश्ता इतना पवित्र नहीं दिखता जो इसके जालिम दख़ल को रोकने की समर्थ्य रखता हो। इस घमंड भाव ने मुझे बहुमूल्य उपकारियों को भी घृणा करने लगा दिया है। जिनके आगे अपने आत्मा के लिए मुझे श्रद्धा से झुकना चाहिए था, मुझे उन उपकारियों की सहायता लेने का अधिकार नहीं रहने दिया, जिसके वह योग्य थे। इसके कारण मैं वह उपकारी खो बैठा हूँ, जो देव प्रभावों के अमृत से मेरी नीचता में गर्क हो रही रूह को उभारने और संवारने के इच्छुक थे। हाँ, मैं अपने लिए भलाई के शुभअवसरों के वह सब मार्ग बन्द कर लिए है और मौत के मार्ग को चुन लिया है।

जब तक मेरे अंह पर कोई चोट नहीं लगती, तब तक मैं बिल्कुल ठीक हूँ, परन्तु जब इस शैतान को कोई छूने का भी हौसला करता है तो मेरी सारी दुनिया बदल जाती है। सब कुछ उल्टा पुल्टा हो जाता है और विनाशकारी गतियों के लिए ज़मीन तैयार हो जाती है। श्रद्धा, कृतज्ञता, दूसरों का ख्याल रखने का भाव मेरी जालिम घृणा भाव की लपटों में स्वाह हो जाता है। मैं आग में जलने लग जाता हूँ। मैं अपने आपको और दूसरों को अन्दर तक कंपा देता हूँ। अफसोस! यह कितना घटिया नज़ारा है!! इस जुल्म को मैं आपकी रोशनी में घृणित रूप में देखता हूँ। दूसरों को घृणा करने की आदत के लिए मैं अत्यन्त दुख में से गुजर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि उन्हें मैं मित्र के रूप में और बड़े से बड़े रूप में देखूं, मैं उन्हें शत्रु न समझूं। मैं देखता हूँ परन्तु आपकी रोशनी के बिना में इस दुर्दशा से छुटकारा नहीं पा सकता।

आपके दर का भिखारी

सोनपार

ईर्ष्या एक रोग है।

ईर्ष्या एक सहज भावना है, मनुष्य प्रकृति में इसका होना स्वभाविक सी बात है। लेकिन ईर्ष्या वा स्पर्दा की भावना में अन्तर है। स्पर्दा की भावना सकारात्मिक होती है और ईर्ष्या की भावना नकारत्मक होती है। स्पर्दा की भावना सफल लोगों के मूल्यों वा गुणों को अपनाकर हमें उन जैसा बनने की प्रेरणा देती है और आगे बढ़ने की ओर प्रेरित करती है। ईष्या के वशीभूत होकर हम दूसरों की सफलता से कुढ़ते हैं और उनके विरुद्ध नफरत से भरकर दूसरों के मान सम्मान को हानि पहुंचाते हैं और अपनी सुख शान्ति को भी भंग करते हैं।

साधारणत: ईर्ष्या कई बार सफल व्यक्तियों के प्रति हिंसक भी बना देती है। इससे दूसरे व्यक्ति की सफलता उसे इतना परेशान करती है कि उसकी स्वयं की सफलता वा सफलता पाने की क्षमता पर भी बुरा प्रभाव डालती है। ईर्ष्यावान अपनी सारी शक्ति दूसरों को पीछे खींचने में लगा देते है, जिससे उसका अपना विकास रुक जाता है।

ईर्ष्या की उपज अंहकार से होती है। अहंकारी व्यक्ति (जैसे कि हम सब हैं, परन्तु मात्रा का ही अन्तर है) यह सहन ही नहीं कर सकता कि कोई उससे अधिक सफल हो, किसी के पास उससे अधिक धन हो, किसी के पास उससे बढ़कर अच्छी सवारी हो। किसी का उसके बच्चे से अधिक विद्वान हो जाए, अधिक कमाने लगे। किसी की बेटी की शादी उनसे अच्छे घर में हो जाए, किसी का बच्चा अपने माता पिता की अधिक सेवा करता हो, कोई भलाई के कामों में उनसे अधिक उत्साह दिखाए वा दान करने लगे, ऐसी ही और बहुत सी बातें हैं, जो ईर्ष्यावान के लिए एक मुसीबत बन जाती हैं। वह दूसरों के पास निन्दा करके, घर में बातचीत के दौरान दूसरों को अपने से किसी भी फील्ड में बेहतर देखकर जलता कुढ़ता रहता है। ईर्ष्या एक ऐसा दानव है कि जो मनुष्य को भीतर से जलाता रहता है, बिना मतलब बेचैन रखता है और यहां तक कि कई व्यक्ति निराशावाद के शिकार हो जाते हैं। बहुत कम लोग होते हैं। जो बिना ईर्ष्या के अपने दोस्तों, पड़ोसियों वा सम्बन्धियों की सफलता का सम्मान कर सकें।

अब ईर्ष्या का दूसरा पहलु है, जहां स्वयं दूसरों की सफलता पर उसका सम्मान करके, उसकी प्रशंसा करके हम ईर्ष्या वा जलन से बच सकते हैं, वहां सफल व्यक्तियों से हमें जो प्रेरणा मिलती है जो वह हमारे मार्ग दर्शक बन सकते हैं, उसका लाभ उठा सकते हैं। ईर्ष्या उसी को होती है, जो कुछ स्वयं करने में सक्षम नहीं होता। यदि आप सफल व्यक्ति से अपनी क्षमताओं से आगे निकल जाते हैं, तो ईर्ष्या स्वयं ही खत्म हो जाएगी।

कहा जाता है कि एक बार महाराजा अकबर ने अपने वज़ीर बीरबल को एक लाईन खींचकर कहा कि तुम इस लाईन को काटे बिना बड़ी करके दिखाओ। बीरबल बहुत चतुर था, उसने उसी समय

उस लकीर के नीचे उससे बड़ी लकीर खींच दी, अकबर की लाईन बिना काटे छोटी हो गई। दूसरा सारांश यह है कि यदि सफल व्यक्ति से बढ़कर आप सफलता प्राप्त कर लो तो वह स्वयं छोटा हो जाएगा, फिर ईर्ष्या का प्रश्न ही नहीं उठता, परन्तु साधारणत: ईर्ष्या वही करता है, जिसमें यह दूसरों से बढ़कर आगे निकलने की क्षमता नहीं होती।

ईर्ष्या करने से बचना सफलता की ओर बढ़ना है, शान्त रहना है, शन्ति यदि मन में होगी तो ही आप कोई सकारात्मिक काम कर सकते हैं, नहीं तो ईर्ष्या से प्रेरित होकर आप निंदक भी बनते हैं, जिससे सम्बन्धों में कड़वाहट आती है। रिश्ते टूट जाते हैं। ईर्ष्या से प्रेरित होकर निन्दा करने वाला न स्वयं सुखी रह सकता है और न किसी और को रहने देता है। हम अपने-अपने अन्दर झांक कर देखें कि जब हम दूसरों के प्रति ज़हर उगलते हैं, तो कहीं हम ईर्ष्या के वशीभूत होकर तो नहीं कर रहे। दूसरों के गुणों का गुणगान करने, उनकी सफलता पर खुश होने और सफलता के रहस्यों को समझने से हमारा व्यवहार सकारात्मिक बनता है।

अब एक और बहुत अवश्यक बात है कि जहां हम खुद दूसरों के प्रति ईर्ष्या से बचें, खुद को भी दूसरों की ईर्ष्या से सुरक्षित रखें। क्योंकि जब ईर्ष्या आपके सफलता के मार्ग में रोड़े अटकाने लगे, आपके विरुद्ध अफवाहें फैलने लगें, तो आपको उससे बचने का भी उपाय करना होगा।

यदि आप दूसरों से अधिक सफलता प्राप्त कर ली है, तो अपने से कमज़ोर वा असफल लोगों के पास उसका बखान न करें। उन लोगों से दूर रहें जो आपकी महत्वाकांक्षाओं का सम्मान नहीं करते। वास्तव में ईर्ष्या प्रसिद्धि की कीमत है, जिस पेड़ को फल लगते हैं, लोग उसी पर पत्थर मारते हैं।

यदि फिर भी आपके निकटवर्ती ईर्ष्या वश अपयश करते हैं तो कोई प्रतिक्रिया ही व्यक्त न करें, धीरे-धीरे उनका अभियान फेल हो जाएगा। ईर्ष्यावान स्वयं वह घाटा उठाएगा कि सफल व्यक्ति की नेक सलाह से वंचित हो जाएगा।

परन्तु याद रखिए कि यदि आप सफल व्यक्ति हैं तो पूर्ण रूप से ईष्या से बच पाना असम्भव है। अपने आप में व्यस्त रहें, लोगों के प्रति सद्भाव की भावना न गंवाए। यदि मधुमक्खियों की अधिक चिन्ता करेंगे तो शहद प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

सुरजीत बराड़

नई सरकार की मुबारक

भारत में हुए आम चुनावों में कांग्रेस को बहुत ज्यादा संख्या में वोट प्राप्त हुयें। जिसके फलस्वरूप सरदार मनमोहन सिंह जी दूसरी बार प्रधान मंत्री बन गये हैं और नया मंत्री मण्डल अनुभवी और साफ छवि वाले जनों का बन गया है। देश को इस स्थायी सरकार की बहुत-बहुत मुबारक हो और यह सरकार अपनी उच्च नीति से देश का अधिक से अधिक भला कर सके।

-मंत्री

मज़हब ही सिखाता है, आपस में बैर करना

साधारणत: यही समझा जाता है कि सब धर्म एक हैं और उन सब का उद्देश्य एक है, आपसी सदभाव वा भाईचारा। परन्तु धर्मों का यह दावा क्या तर्क की कसौटी पर ठीक प्रमाणित होता है? यदि हम पक्षपात से ऊपर होकर गंभीरता पूर्वक विचार करें तो पता चलता है कि धर्म ही आपस में बैर पैदा करवा रहे हैं। ऐतिहासिक घटनाएं इसकी साक्षी देती हैं :-

महमूद गज़नवी ने धर्म के नाम पर हिन्दुओं के मन्दिरों को लूटा, तोड़ा और सदा के लिए हिन्दुओं के दिलों में मुस्लमानों के प्रति घृणा भर दी। कहते हैं कि सोमनाथ मन्दिर के पुजारी महमूद गज़नवी के पास प्रार्थना लेकर गए कि तुम सारा धन, जेवरात ले लो परन्तु मूर्ति को खण्डित न करो, उसने उत्तर दिया "मैं बुत्त फरोश कहलाना नहीं चाहता, मैं अपने धर्म से पतित होना नहीं चाहता।"

औरंगज़ेब ने धर्म की आड़ में क्या क्या जुल्म नहीं ढाए। पक्के नमाज़ी थे अपने लिए राजकोष से पैसा नहीं लेते थे मेहनत करके अपनी जरूरतें पूरी करते थे, परन्तु धर्म के जनून ने उन्हें हिन्दुओं से बैर करना ही सिखाया। कितने हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा। गुरु तेग बहादुर जी जैसे शान्ति पसन्द गुरु को तसीहे दिए और कत्ल किया। उसका परिणाम खालसा का जन्म हुआ और उनके भीतर भी मुसलमानों के प्रति घृणा भाव बढ़ता गया।

हकीकत राय को कत्ल किया गया, उसका अपराध केवल इतना था कि उसने उस समय इस्लाम धर्म को स्वीकार करने से इंकार कर दिया था। गुरु गोबिन्द सिंह जी के दोनों साहिबजादों को भी इसीलिए जिन्दा दिवार में चुनवा दिया गया कि वह गैर धर्म से सम्बन्धित जन के पुत्र थे, यहूदियों ने ईसा को इसीलिए सूली पर चढ़ा दिया कि क्योंकि वह उनके धर्म के विरुद्ध प्रचार करते थे।

गलेलियो, अरस्तु आदि को इसीलिए असह्य कष्ट दिए, क्योंकि वह धर्म ग्रंथों की शिक्षा के विरुद्ध सचाईयां बताते थे। सुकरात को भी इसीलिए मौत के घाट उतारा गया क्योंकि उनके विचार बेशक कितने भी नेक और तर्क मूलक थे, परन्तु धार्मिक कहलाने वाले जनों के साथ मेल नहीं खाते थे और उनके धार्मिक ग्रन्थों के विरुद्ध थे। मन्दिरों मस्जिद के नाम पर झगड़े, किस लिए हैं, अपने विरुद्ध धार्मिक विचार रखने वालों को घृणा से देखा जाता है, इसी का लाभ स्वार्थी जन उठाकर इन धार्मिक दंगों को हवा देते रहते हैं, और अन्ध विश्वासी जन धर्म के नाम पर एक दूसरे के शत्रु बन जाते हैं। घृणा, द्वेष की भावनाओं को भड़का कर धर्म के नाम पर आतंकवाद का जन्म हुआ है।

आतंकवाद ने जिस प्रकार का भयावह रूप ग्रहण कर लिया है, उसकी तस्वीर रूह को कंपा देती है। धर्म के नाम पर स्त्रियों पर जुल्म हो रहे हैं। धर्म के नाम पर आंतकवादियों का कहर थमने का नाम नहीं लेता। कोई देश इससे सुरक्षित नहीं। धर्म के नाम पर जेहाद की शिक्षा है। मौलवी, पादरी, पंडित तरह-तरह से धर्म के नाम पर दहशत फैला रहे हैं केवल ईस्लाम ही दूसरे धर्म मानने वालों को शत्रु नहीं बताता। हिन्दु धर्म में भी जहां चींटी को मारना पाप समझा जाता था, अब धर्म की आड़ में सेनाएं बन गई हैं। धर्मो ने गुण्डे पैदा कर दिए हैं, कहीं शिव सेना है तो कहीं राम सेना।

कहीं स्वयं सेवक सघं, तो कहीं विश्व हिन्दु परिषद और बजरंग दल। धर्म के नाम पर नित नये दल बन रहे हैं। कहीं ईसाइयों पर हमले करके उनकी सम्पति को नष्ट किया जा रहा है कि वह भारतियों को ईसाई बना रहे हैं। अब मालागांव के बम विस्फोटों में हिन्दु संगठनों और साध्वियों का हाथ है।

संक्षेप में यदि हम कहें तो धर्मों ने ही मानव को मानव का शत्रु बना दिया है। सद्भाव का स्थान द्वेष भावना ने ले लिया है। धर्म की भावनाओं को भड़का कर जिस प्रकार प्रतिदिन जानें ली जा रही हैं, सम्पति नष्ट की जा रही है, फिर हम कैसे कह सकते हैं कि "धर्म नहीं सिखाता आपस में बैर रखना, उल्टा सच्च यह है कि धर्म ही सिखाता है आपस में बैर रखना। ज्यों ज्यों मनुष्य अपने अपने धर्म में अपनी तरफ से प्रगति करता जाता है, त्यों त्यो वह अन्दर से कट्टर बनता जाता है, इसके परिणाम स्वरूप वह साधारण इन्सानियत से भी गिरता जाता है। देव धर्मावलम्बियों जनों पर भी यही नियम कारगर हो सकता है। बेहद सतर्क रहने और देव ज्योति द्वारा दशायें मार्ग पर चलने की अवश्यकता है। हम सब पहले इन्सान हैं, फिर धर्म है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने धार्मिक लोगों में धर्म अन्धता से उपजे ईर्षा द्वेष को देखा और धर्मों से उपजे पापों के समुन्द्र में डूबे जाते देशवासियों को देखा और एक नये सर्वहित सम्पादक धर्म की नींव रखी, उसके लिए अनोखा जीवन व्रत ग्रहण किया और धर्म के ठेकेदारों को उनका असली चेहरा दिखाया। उसके लिए अथाह कुर्बानियों की परन्तु सम्पूर्ण मानवता के लिए एक मात्र विज्ञान मूलक धर्म की नींव रखी जिसका लक्ष्य पूजनीय भगवान ने अपनी ही देव वाणी में बताया है :-

"मैं इस पृथ्वी में स्वर्ग चाहता हूँ। मैं इस पृथ्वी में वह दीन वा धर्म लाना चाहता हूं कि जो इसी दुनियां में सब प्रकार के पापों और बुराईयों का नाश करता हो, जो इसी दुनियां में ऐसे सच्चे और भरोसे के योग्य सम्बन्धी उत्पन्न करता हों कि जिनके उत्पन्न होने से मनुष्य जीवन सब प्रकारसे मीठा और सुख प्रद बन सकता हो, जो इसी जगत में मनुष्यात्माओं को सत्य मोक्ष देता हो, और उच्च चरित्र के ऐसे दर्जे में ढालता हो कि जिससे मनुष्य न केवल किसी मनुष्य के लिए, किन्तु प्रत्येक ऐसे जीवधारी के लिए कि जिससे उसका शुभ सम्बन्ध हो, पूर्णता हितकर सम्बन्धी प्रमाणित हो"

पूजनीय भगवान का उत्पन्न किया धर्म, किस कदर मानवता को उभारने, उन्हें एक दूसरे के लिए हितकर बनाने का धर्म!

उनकी इस अनोखी धर्म शिक्षा को पाकर उनकी रोशनी में ही यह भजन रचा जा सकता था :-

"भला चाहना मनुष्य मात्र का, ऐ इन्सान वाजिब हैं;
किसी की तू न चाह हानि, नही नुकसान वाजिब है।
वह हिन्दु हो मुस्लमान हो, यहूदी हो या इसाई,
ब्रह्मों, आर्या, सिक्ख का, उचित सम्मान वाजिब है।
वह रूमी हो या रूसी हो, वह चीनी हो या जा जापानी;
फरंगी एशियाई हो, अफ्रीकी या अमरीकी,
कहीं का हो कोई भी हो, उचित सम्मान वाजिब है।
नसल और रंग के कारण, नहीं अपमान वाजिब है।
गल्त जाता हो गर कोई, धर्म मार्ग से भूला हो,
मुहब्बत से उसे देना, धर्म का ज्ञान वाजिब है।
किसी मतभेद को लेकर, कदूरत, नफरतों, नख़वत,
तआसुब तंग दिली कीना, नहीं नुकसान वाजिब है।
मनुष्य मात्र के रिश्तों में, जो सद्शिक्षा दी भगवन ने,
दिए आदेश जो हितकर, पालना उनका ही वाजिब है।

(सुरजीत बराड़)

श्रीमान पं० परमेश्वर दत्त जी विशारद

1 – सत्य कथन का हितकर भाव

विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान पण्डित परमेश्वर दत्त जी जन्म काल से ही विशेष प्रकृति लेकर उत्पन्न हुए थे। वह छोटी आयु में हिन्दी, गुजराती, हिसाब और कुछ उर्दू सीख गए थे। अपनी पढ़ाई के साथ-साथ अपने छोटे भाई और बहिन को भी पढ़ाया करते थे। वह सारे परिवार का खाना बनाते थे, और जब पिता नौकरी पर होते, तब उनका खाना वहां पहुंचाते। यह सारा काम करके बहुत उत्साह से भरे रहते। वह अपने पिता और भाई बहिन के सम्बन्ध में इतने सेवाकारी होकर भी उन के सम्बन्ध में ही निर्भयता से सच बोल देते थे। उन्हीं दिनों की एक घटना है, कि उनके पिता अपनी नौकरी में असावधान होने के कारण उच्चपद से स्थगित किए गए। और साधारण सिपाही बनाए गए। पण्डित परमेश्वर दत्त जी बालक होकर भी अपने पिता के अफसर के पास पहुंचे, और जाकर उन से प्रार्थना की, कि साहिब! मेरी दरिद्रता पर दया दृष्टि करके मेरे पिता को उच्च पद से वंचित न करें। साहिब ने पूछा, क्या तुम्हारे पिता का दोष नहीं है? पण्डित जी ने उत्तर दिया, कि मेरे पिता जी अवश्य अपराधी है, परन्तु घर में खाने को नहीं है। साहिब ने कहा, कि यदि तुम यह कहो, कि मेरे पिता निर्दोष हैं, तो हम तुम्हारे पिता को उसी पद पर नियुक्त कर सकते हैं अन्यथा नहीं। बहादुर बालक ने कहा, मैं असत्य नहीं कह सकता, क्योंकि मेरे पिता जी ने मेरे सामने अपराध किया है। इस बहादुर बालक के सत्य कथन का दृश्य साहिब के दिल को हिलाने में कामयाब हो गया, और उन्होंने ने पण्डित जी के पिता को फिर उसी पद पर नियुक्त कर दिया।

धर्म का स्वांग भरने वाले कई जन जो बात बात में झूठ बोलते हैं, कपटता से काम लेते और राजनैतिक चतुराइयां या चालाकियां करते हैं, उनके पतित जीवनी की तुलना में इस बालक का सत्य कथन कितना सुन्दर, सराहनीय और अनुकरण के योग्य है।

2 – उच्च संगत और पर सेवा का विशेष भाव

1) ऐसे विशेष हृदय को ज्यों ही देव समाज की धर्म संगत प्राप्त हुई, त्यों ही उन के भीतर गैर मामूली उच्च परिवर्तन पैदा होना शुरू हुआ, उन जो थोड़े दिनों में ही यह प्रतीत होने लगा, कि मनुष्य को अपनी अज्ञानता और मिथ्या विश्वासों और नाना प्रकार के पाप कर्मों से औरों को सताने और हानि पहुंचाने वाले बने हुए हैं; उनके दुष्ट स्वभाव को बदल कर उन्हें सत्य ज्ञान और उच्च बोध देकर औरों की सेवा करने और नेचर में भलाई के लाने के योग्य बनाना देव समाज का मुख्य काम है, और इसी काम को देव समाज में धर्म कार्य कहते हैं। ऐसी अनोखी समाज के इस अनोखे कार्य को अधिक से अधिक अध्ययन करने और उस से लाभ उठाने का पूर्ण निश्चय कर लिया। यह उन का भाव सारी आयु कायम रहा और कभी शिथिल नहीं हुआ। यह उन का बहुत बड़ा सौभाग्य था, कि वह भगवान देवात्मा के ज़माने में ही आए, और उन के ज़माने में ही इस दुनिया से चले

गए। इसलिए गैर मामूली दृश्यों के देखने का अधिकार पाते रहे।

2) ज्यों ही श्रीमान पण्डित जी ने देव समाज की धर्म संगत में आना शुरू किया, त्यों ही उन की विरोधिता आरम्भ हो गई। वह उस समय ओरीयेंटल कालेज में पढ़ते थे। कॉलेज के विद्यार्थी उन्हें देव देव कहकर हंसी उड़ाते और उन को वाममार्गी और इसाई बताते रहे, उनके घर वालों को यह लिखते रहे, कि वह आवारागर्द बन गए हैं। बोर्डिंग के कई विद्यार्थी इस ताक में रहते, कि किसी रात को वह बोर्डिंग से गैर हाज़िर रहें, तो उन्हें बोर्डिंग से निकलवा दिया जावे। यह दुष्ट यहां तक आन्दोलन करने लगे, कि श्रीमान पण्डित परमेश्वर दत्त जी को चौके में बैठकर भोजन पाने की इजाज़त न दी जावे। इन दुष्ट जनों ने मन में यह ठान लिया, कि पण्डित जी का कालेज और बोर्डिंग में रहना कठिन किया जावे परन्तु बहादुर पण्डित जी इस पाप मूलक उत्पीड़न और अत्याचार से केवल यही नहीं, कि पीछे नहीं हटे, और नीचे नहीं गिरे, किन्तु धीरे-धीरे और भी उच्च संगत के द्वारा अधिक से अधिक श्रेष्ठ बनते गए। और इस संग्राम का यह फल हुआ, कि उन्होंने भगवान् देवात्मा की सेवकी में दीक्षित होने का पक्का इरादा कर लिया। वह फाल्गुण सम्वत ..... वि० में भगवान देवात्मा की सेवकी में ग्रहीत किए गए। पण्डित जी का सेवक बनना ही था, कि उन के जीवन में एक आश्चर्य जनक उच्च परिवर्तन उत्पन्न हुआ। न केवल उन की नियत दस पापों से रक्षा हुई, किन्तु पिछले किए हुए पाप कर्मों के लिए उन के हृदय में पश्चाताप पैदा हुआ। जिन जिन की पहले हानि की थी, उनकी सेवा में पहुंच कर क्षमा प्रार्थना करने के लिए मजबूर हुए। उन्होंने कई परिशोध किए। पहले किए हुए दुष्ट कर्मों को याद करके वह अपने आप को धुतकारते रहते थे। और अपने आप को दण्ड देते थे। कई बार मंद कर्मों को सामने लाकर फूट फूट कर रो पड़ते थे।

3) पण्डित जी के जीवन में यह बेहतरी का सिलसिला बराबर जारी रहा और आखिरकार उन के भीतर यह आकांक्षा बहुत प्रबल रूप से उन्हें हिलाती रही, कि ऐ परमेश्वर दत्त! फिर तुम्हारे लिए और कोई रास्ता न रहेगा, अब तुम धर्म कार्य में ही अपने जीवन को व्यतीत करो। इस पृथ्वी पर मनुष्य जन्म लेने का अपना उद्देश्य पूरा करो। पण्डित जी को यह प्रतीत हो चुका था, कि भगवान देवात्मा और उनके कार्य में अपने जीवन की तुच्छ शक्तियों को खर्च करने के भिन्न और कहीं भी अपना जीवन खर्च करना लाभ का सौदा नहीं। क्योंकि भगवान् देवात्मा और उनके कार्य की सेवा के भिन्न मनुष्य का जीवन सफल नहीं होता। उनको पता था, कि सेवा के कई काम होते हैं, कहां शारीरिक सेवा करने का काम है, कहीं विद्या देने का काम है, परन्तु उन सब सेवाओं से ऊपर आत्माओं को अज्ञानता और पाप जीवन से निकालना और उनके भीतर आत्मिक सत्य ज्ञान और उच्च भावों को पैदा करना सर्व्व श्रेष्ठ काम है। और ऐसे काम की सफलता में यदि वह किसी प्रकार की भी सेवा करें, तो ही उनका श्रेष्ठ अधिकार है। इस प्रकार के भावों के जाग्रत और उन्नत होने के कारण उनके भीतर यह भाव प्रेरणा करता रहा, कि वह अपनी कुल ताकतें भगवान् देवात्मा के कार्य में अर्पण कर दें।

4) जिन दिनों में पण्डित जी के भीतर

यह पर सेवा सम्बन्धी भाव ठाठें मार रहा था, तब वह विद्यार्थी जीवन व्यतीत करते थे। उन दिनों में कुछ ऐसी घटनाएं उत्पन्न हुई, जिन का उन के योग्य हृदय पर गैर मामूली असर हुआ। उन के एक साथी विद्यार्थी परीक्षा देकर अपने घर चले गए। परीक्षा का फल निकलने से पहले ही बीमार होकर वह अपने घर में मर गए। उनके मरने के बाद जब परीक्षा का नतीजा निकला, तब न केवल वह पास हुए, किन्तु वजीफे के भी अधिकारी समझे गए। उन्हीं दिनों में एक और विद्यार्थी जिन का नतीजा निकल चुका था, और वह पास हो चुके थे, वह मर गए। उसके शीघ्र ही बाद श्रीमान डाक्टर हरनाम सिंह जी जो सारी यूनिवर्सिटी में अव्वल रहे थे, वह परलोक सिधार गए। तब पण्डित जी के भीतर यह प्रश्न उत्पन्न हुआ, कि ऐ परमेश्वर दत्त! उपरोक्त जनों ने यूनिवर्सिटी के प्रशंसा पत्र लाभ करने के लिए वर्षों तक बहुत बड़ा परिश्रम करके परीक्षा दी, और उन में वह कृत कार्य भी हुए, परन्तु वह विचारे अपने अपने प्रशंसा पत्रों से कोई लाभ न उठा सके, किन्तु उन्हें इसी पृथ्वी पर छोड़ गए। तुम भी उन की न्याई प्रशंसा पत्रों के पीछे पड़े हुए हो, तुम्हारे पास क्या प्रमाण है, कि उपरोक्त जनों की न्याई परीक्षा देकर या परीक्षा देने से पहले ही मर न जाओगे? और तुम्हारा बड़े परिश्रम द्वारा प्रशंसा पत्र लाभ करना व्यर्थ न जाएगा? यदि तुम इतने समय को पुस्तकों पर घोटा चढ़ाने में खर्च करने की अपेक्षा निष्काम पर सेवा का काम कर लो, तो तुम्हारा जन्म कुछ न कुछ सफल तो हो जाएगा, किस को यकीन है, कि परीक्षा में उत्तीर्ण होकर फिर पर सेवा के काबिल हो जाओगे, पहले शरीर पर ही भरोसा नहीं, कि कब यह छूट जाए, और दूसरा यह कि स्वार्थ परायण जनों में अधिक से अधिक समय वास करने में तुम्हारी सेवा की आकांक्षा ही मर जाए। और यदि किसी कारण से तुम पर सेवा के करने के ही अयोग्य हो गए, तो फिर तुम ही बताओ, कि तुम्हारा यूनीवर्सिटी के प्रशंसा पत्र को लेना तुम्हारे लिए किस काम का होगा?

इस प्रकार के सवालात से पण्डित जी अपने इस पक्के इरादे पर पहुंच गए, कि वह अपनी शेष आयु पर सेवा में ही व्यतीत करेंगे और आगे और पढ़ना तरक कर देंगे। यह है पण्डित परमेश्वर दत्त जी के जीवन की कथा, कि वह किस प्रकार पूर्ण रूप से पर सेवा के काम में लग गए? सम्भव है, ऐसे प्रश्न कई हृदयों में उत्पन्न होते हों, और भाव भी पैदा होते हों, कि हम पर सेवा में लग जाएं, लेकिन कितने जन हैं, जो सेवा में लग जाते हैं? पण्डित परमेश्वर दत्त जी विशेष हृदय रखते थे, और इसीलिए उनके जीवन की घटनाएं भी विशेष थी। और उन घटनाओं का परिणाम भी विशेष ही हुआ।

3 – पर सेवा सम्बन्धी कार्य में उन के सुन्दर भावों का दर्शन

श्रीमान पण्डित परमेश्वर दत्त जी के भीतर जब प्रबल सेवा का भाव पैदा हुआ, और उन्होंने यह निश्चय कर लिया, कि आगे की पढ़ाई बन्द करके वह भगवान देवात्मा के कार्य में लग जाएंगे, तब यह नहीं था, कि उन के सामने मुसीबतों और कठिनाईयों का दृश्य नहीं था, वह खुद फरमाते हैं; कि "उस समय में काम करने वालों को जिन-जिन कठिनाईयों में से गुजरना पड़ा था, वह भी मेरे सामने थी, मैं अच्छी तरह से यह समझने के योग्य हो चुका था, कि दुनिया में जो

लोग भलाई के काम में नहीं लगे हुए, उन में से भी बहुत से कई प्रकार की मुसीबतें भुगत रहे हैं, और मैं यदि भलाई के पीछे जाकर किसी मुसीबत में पड़ जाऊ, तो कोई घाटे की बात नहीं है, क्योंकि उस से भी मुझे शुभ ही प्राप्त होगा।"

4 – आप के दर्शन और निकटता के बिना सब कुछ फीका मालूम होता है।

..... सितम्बर ..... ई० को श्रीमान पण्डित परमेश्वर दत्त जी ने एक पत्र भगवान देवात्मा की सेवा में काला बाग ज़िला हज़ारा से लिखा, वह पढ़ने के योग्य है, जिस से साफ प्रगट होता है, कि देव प्रभावों के प्रेमक जन को दुनिया के कुल सामान फीके नज़र आते हैं, और ऐसी चीज़ें भी फीकी मालूम होती है, जो संसार के गले का हार बनी हुई है। प्रेम अज़ीब चीज़ है, वह अपने प्रिय जन की निकटता लाभ करने के लिए गैर मामूली धक्के देता है, और उस की जुदाई में हृदय को अशान्ति से भर देता है। श्री पण्डित जी के हृदय में उस प्रेम का दीपक जलता था, और इसलिए ही अपने पत्र में उन्होंने जिन भावों का प्रकाश किया है, वह यह हैं :-

"मैं यहां रहकर यद्यपि साधारण दृष्टि से मौज में रहता हुआ दिखाई देता हूं, क्योंकि मुझे बीमारी की कोई विशेष पीड़ा नहीं, खाने पीने के लिए जिन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, उनके खरीदने के लिए आप ने यथेष्ट धन दिया हुआ है, पहनने और ओढ़ने के लिए मेरे पास वस्त्र भी काफी हैं, और यदि और जरूरत पड़े, तो वह भी देने के लिए तैयार हैं, रसोई बनाने के लिए रसोइया नौकर है, मेरे कितने ही काम नौकर कर देता है, घी, दूध, मक्खन, मलाई और फल आदि अमीरों के पदार्थों के खाने की आप ने इजाज़त दे रक्खी है। बड़े-बड़े अमीरों में से कोई कोई ऐसे ठंढे पहाड़ों पर सैर करने का अवसर पा सकते हैं, आप की कृपा से मैं गर्मियों से बचा हुआ हूं, आप की शक्ति से दस मोटे-मोटे पापों से बचे होने के कारण बहुत से पढ़े लिखे और अनपढ़ मेरा सन्मान करते हैं, आप ने मुझे कर्मचारी का पद दिया हुआ है, इसलिए आप के सेवक और श्रद्धालु भी मेरा आदर सन्मान करते हैं,..... परन्तु मैं यहां रहकर सन्तुष्ट नहीं रहता, मेरा दिल प्रसन्न नहीं रहता, मुझे पूर्ण रूप से शन्ति नहीं मिलती, आप के अधिकार से बाहर रहकर मुझे यह आज़ादी सुख नहीं देती, मुझे अनुभव होता रहता है, कि यह स्वतंत्रता मेरे जीवन की नौका को रसातलमें पहुंचा देगी, इस अवस्था में रहते-रहते बड़ों के अधीन रहने और उन से अपने दोषों के सुनने की योग्यता ही खो बैठूंगा, निकम्मा रहते-रहते सेवा करने की ओर से मेरी तबियत का झुकाव बिल्कुल मिट जाएगा, अपनी नीचता को देखने का काफी अवसर न पाकर मेरा हृदय घमंड से भर जाएगा, और बड़ों की महिमा को उपलब्ध करने का भाव बिल्कुल खो बैठूंगा। इतनी हानि उठाने के अनन्तर यदि मेरा शरीर बिलकुल निरोगी हो भी गया, तो क्या हुआ, इसके भिन्न जब तक मैं इस लोक में जीवित रहकर आप के प्रभाव में रहने का अधिकार पा सकता हूं, उस से एक-एक दिन वंचित हो जाना मेरे हृदय को उसी प्रकार तृप्त शान्त और सुखी नहीं होने देता, जिस प्रकार बाहर से साबत चमड़े में ढकी हुई परन्तु भीतर से टूटी हुई शरीर की हड्डी किसी बीमार को सुखी नहीं होने देती।"

आत्म हिताकांक्षी का कैसा विचित्र-पत्र! देव प्रभावों के प्रेम की कैसी सुन्दर झलक!! एक विशेष हृदय की कैसी सुनहरी अवस्था!!

समाज सुधार की हिंसा

जमाने में हजार तरह के दुख हैं, कष्ट हैं, उपद्रव है, लेकिन एक ऐसा विचित्र दुख भी है, जो समाज सुधारक, नीति - नियामक ठेकेदार लोग अन्य लोग अन्य लोगों को देते हैं। वे बिना आपकी मर्जी और मंशा के आपको बदलने व सुधारने आ जाते हैं और सब प्रकार की स्थूल व सूक्ष्म हिंसा में लग जाते हैं।

इस बात का एक उदाहरण है - 24 जनवरी को मंगलौर की एक मधुशाला में श्रीराम सेना द्वारा कुछ युवतियों को मार पीट कर बाहर निकालना। उनसे अगर कोई पूछे कि यह आपने अभद्र व्यवहार क्यों किया तो वे कहेंगे कि उनका उद्देश्य बहुत ऊंचा है, वे समाज को बदलने के लिए यह सब कर रहे हैं। उनके सामने कोई आदेश है परम्परा का, जिसकी रक्षा करने के लिए वे ऐसा हिंसक व्यवहार कर रहे थे, अब जिसको भी आदर्शों का डंका पीटना है या आदर्शों के नाम पर धंधा करना है, उसके लिए सब तरह के आदर्श उपलब्ध है, शास्त्र भरे पड़े हैं आदर्शों से, अंबार लगे हैं आदर्शों के जितने उठाने हैं, उठा लो और निकल पड़ो समाज में और लोगों पर थोप दो। करो हिंसा आदर्शों के नाम पर। अफगानिस्तान में तालिबान भी यही कर रहा है - छोटी - छोटी बालिकाएं, तरुणियां, युवतियां और महिलाएं... इन सबको पूरी तरह बुर्के में ढंके रहना पड़ेगा, क्योंकि वे स्त्रियां हैं। किसी पुरुष के संरक्षण के बिना इनको बाहर आने की अनुमति नहीं है और न ही ये शिक्षा प्राप्त कर सकती है। तालिबान के आदेशों और आदर्शों के अनुसार इन्हें अपने घर की कैद में बंद रहना है और एक घुटन भरा जीवन जीना है। अगर वे ऐसे आदेशों का पालन नहीं करती हैं तो उसकी सजा मौत है।

ऐसे आदर्शों और आदेर्शों से भारत भी अछूता नहीं है - न पहले था और न अब है, चाहे यह देश कितना ही विकसित क्यों न हो गया हो। वहां वे यह सब कुछ इस्लाम और कुरान के नाम पर करते हैं, यहां मर्यादा पुरुषोतम राम के नाम पर करने लगे हैं, लेकिन मानसिकता एक जैसी है: आदर्श भी वे तय करेंगे, आदेश भी वे ही जारी करेंगे, लेकिन बदलना दूसरों को है। दूसरों को बदलने वाले ऐसे लोगों के जीवन को आप निहारें, निरीक्षण करेंगे तो आप में ऐसा कुछ नहीं मिलेगा, जो आपको पैंगबर मुहम्मद और भगवान राम की महानता की याद दिलाए, लेकिन ये दुहाई ऐसे महान व्यक्तियों की देते हैं। इनका अपना जीवन देखेंगे तो ये आपको आवारा, गुंडे और ठगों से कुछ ज्यादा दिखाई नहीं पड़ेगे। अगर ये लोग ऐसे न होते तो ये हिंसा क्यों करते, लेकिन इन्होंने अपनी हिंसा की वृत्तियों को सच्चरित्रता के आभूषणों से सुसज्जित कर लिया है, इसलिए इन्हें लाज शरम और अपराध भाव भी नहीं पकड़ता ये तो एक महान कार्य में संलग्न हैं, समाज को नैतिकता की ओर ले जा रहे हैं। हजारों वर्ष से बड़े - बड़े समाज सुधारक समाज को सुधारने में संलग्न रहे हैं। और वे तो निश्चित ही बहुत बड़े सुधारक थे तालिबान और मंगलौर की श्रीराम सेना जैसे स्वघोषित सैनिक नहीं थे, सच में महान थे वे भी अपना संपूर्ण जीवन इस कार्य में लगाने के बावजूद समाज को कितना बदल सके? समाज आज भी वही का वही

खड़ा है और अगर श्रीराम सेना के लोगों से पूछो तो समाज और नीचे चला गया है, तभी तो उनका यह सब करना पड़ा।

कुछ मजा ऐसा है कि दुनिया में जितने अधिक समाज सुधारक बढ़ते हैं, उतने ही अधिक उपद्रव होते हैं। इस बात का केवल एक ही निष्कर्ष है कि समाज सुधारकों के कारण ही यह दुनिया इतनी बुरी हो गई है, लेकिन इनसे कोई कहता क्यों नहीं कि भैया, हमें बख्शो, हमें हमारे हाल पर छोड़ दो। बदलना ही है तो आप अपने को बदलो, अपनी फिक्र करो। न आप मुहम्मद के प्रतिनिधि है और न आप श्रीराम के प्रतिनिधि हैं, क्योंकि आपके अपने जीवन में धार्मिकता की कोई सुगंध नहीं दिखाई पड़ती है। धार्मिकता की सुगंध विकसित चेतना का परिणाम है। समाज को बदलने वाले इन लोगों की अपनी चेतना विकसित नहीं है, क्योंकि विकसित होने के लिए पहले चेतना का होना जरूरी है। जिसके पास चेतना होती है, वह सबसे पहले स्वयं को बदलता है, स्वयं की चेतना को विकसित करता है। अगर श्रीराम जैसे महान पुरुषों की, संतों की, ऋषियों की कोई सच्ची शिक्षा हो सकती है तो वह सबसे पहले यह हो सकती है कि व्यक्ति दूसरों के जीवन में किसी तरह का हस्ताक्षेप करने की बजाय स्वयं को रूपांतरित करें।

जब उसके जीवन में रूपांतरण होगा, तो उस व्यक्ति के जीवन की आभा, उसका प्रकाश, उसका माधुर्य, उसकी सुगंध अन्य लोगों के हृदय को स्पर्श करेगी, आलोकित करेगी। किसी को हथियार उठाकर जाकर दूसरों को बदलने की जरूरत नहीं रहेगी। दूसरों के जीवन में हस्तक्षेप हिंसा है स्थूल और सूक्ष्म दोनों। और ऐसे लोगों के साथ ऐसा ही व्यवहार होना चाहिए, जैसा व्यवहार कानून हिंसक लोगों के साथ करता है। हिंसा अक्ष्मय है - और अगर ऐसी हिंसा निहत्थी महिलाओं के साथ की जाती है, चाहे वे मधुशाला में बैठी हों अथवा किसी होटल में, यह हिंसा सर्वथा अक्षम्य है। पुरुषों के लिए मधुशाला अथवा होटलों में बैठकर मदिरापान क्यों क्षम्य है जब कि यह आचरण दोनों के लिए हानि कारक है। पूरे विश्व में महिलाओं को पुरुषों के बराबर के अधिकार उपलब्ध हैं तो अफगानिस्तान और हिन्दुस्तान में क्यों उपलब्ध न हों? भारत की युवतियां अपने सौंदर्य और प्रतिभा के बल पर विश्वसुंदरी और ब्रह्माण्ड सुंदरी घोषित होती हैं, तब तो कोई श्रीराम सैनिक उसका विरोध नहीं करता दिखाई पड़ता, तब कोई उन्हें सीता मैया बनने की सीख नहीं देता।

लेकिन कुछ लोग हैं, जो हमारे देश में सदा किसी न किसी मौके की तलाश में रहते हैं कि जब भी मौका मिले किसी महापुरुष के नाम पर बनाओ सेना और लग जाओ हिंसा में। आश्चर्य तो यह है कि महापुरुषों के सच्चे भक्त, श्रीराम के सच्चे भक्त इन अवांछनीय तत्वों को रोकते - टोकते नहीं कि आप क्यों अपने कृत्यों से श्रीराम जैसे महान पुरुषों के नाम को बदनाम कर रहे हैं। निरीह निहत्थी नारियों के साथ मारपीट के लिए क्या किसी महापुरुष का समर्थन हो सकता है?

समय आ गया है कि हम सब समाज सुधारकों से और समाज सुधार के नाम पर हिंसा की राजनीति करने वाले लोगों से सावधान हो जाएं। इनके उपद्रव और उत्पाद के लिए इनके साथ किसी प्रकार का सहयोग न करें। असली सुधार है स्वयं का सुधार।

शुभ संग्राम

7 मार्च सुबह 9.00 बजे :– पदमपुर में आखरी सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई, इसमें बताया गया कि मनुष्य जीवन हर समय या बन रहा है या बिगड़ रहा है। इसकी सोझी देवात्मा सत्गुरू देते हैं, शरीर के प्रति भी सोझी देते हैं। विश्व का कण-कण परिवर्तित हो रहा है। मन की केवल तसल्ली से कुछ नहीं बनता। हृदय की शक्तियों को दिखाने के लिए एक रोशनी की अवश्यकता होती है, जब तक वह नहीं मिलती, तब तक यह पता नहीं लगता कि मेरा कुछ बन रहा है या बिगड़ रहा है। मन रुपी खेत का क्या हाल है? डाक्टर रविन्द्र नाथ टैगोर ने एक मिस्तरी के बारे में लिखा है कि वह संगल बनाकर धन कमाने की धुन में संगलों में ही दब गया और उसकी जीवन लीला समाप्त हो गई। धन को मनुष्य ने मालिक वा देवता बनाया हुआ है। मांस खाने से दया, शुक्रगुज़ारी वा न्याय के भाव को हानि पहुंचती है। हम अहंकार के पुतले हैं, धन के प्रेमी हैं, कई काम वासना के कुत्ते हैं, कोई गुस्से से भरे हुए हैं। डाक्टर श्री राम जी ने गुरु की ज्योति पाकर देखा और लिखा :-

"था न जो सदबरग़ भी, वह गुलहज़ारा हो गया।" जिसने पर सेवा में तन, मन, धन नहीं लगाया, उसने अपना जीवन बर्बाद किया है। मदर टैरेसा, भक्त पूर्ण सिंह जी ने जीवन को परोपकार में लगाकर सफल किया है।

यहां पर 1300 रू० दान में और कुछ चन्दा अखबार प्राप्त हुआ।

गंगा नगर :– श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्री ओम प्रकाश जी वर्मा जी और अनिल जी भी शाम 5.00 बजे गंगा नगर साधन स्थान पर पहुंच गए। शाम को 8.30 बजे सभा रखी गई।

7–3–2009, रात 8.30 बजे :– यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि देव धर्म एक बिल्कुल भिन्न किस्म का धर्म है। मनुष्य को इसकी समझ देर से आएगी। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने मनुष्य को अन्दर से धार्मिक बनाने का सच्चा मार्ग बताया है। यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। मैं चार पक्षों में सत्गुरु का धन्यवाद करता हूँ। मेरा नशे में बर्बाद होता जीवन बच गया। नशे हमारे शत्रु हैं। हमारी रुह, हमारे शरीर, हमारी मान इज्जत के शत्रु हैं। सत्गुरु ने महा उपकार करके मुझे बचा लिया है। काम वासना का दास बन चुका था, किसी भी स्त्री को साफ मन से नहीं देख सकता था। आज इस ओर से इतना सकून है कि पूजनीय भगवान को धन्यवाद देता नहीं थकता। इस कोढ़ से गुरु ने बचा लिया। पढ़ाने में सख्त मेहनत करने लगा दिया, जो कमी रहती वह फालतू समय लगाकर बच्चों की पूरी करता था। बच्चों के प्रति सख्ती के स्थान पर उनको मां की तरह प्यार करने वाला गुरू ने बना दिया। माता पिता के प्रति बेरूखी के स्थान पर प्यार और सत्कार पैदा हो गया। सभा में हृदय धन्यवाद के भावों से भर रहे थे। प्रभावशाली ब्यान था।

8–3–2009 सुबह 9.00 बजे :– यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया

गया सब धर्म मतों के विद्यार्थियों के लिए Physics (भौतिक विज्ञान) एक है। कोई इसमें टकराव नहीं, परन्तु धर्म मतों की शिक्षा भिन्न होने के कारण लोग बहुत अन्धकार में हैं। कोई कहता है इस्लाम धर्म ठीक है, बाकी सब काफिर हैं। कोई कहता है हिन्दु धर्म सब से ऊंचा है। ईसाई कहते हैं कि परमात्मा का इकलौता पुत्र हमारे गुनाहों को लेकर सूली चढ़ गया, वह गुनाहों को क्षमा करने की शक्ति रखता है, इसलिए वहीं धर्म सच्चा है। धर्म के नाम पर बहुत युद्ध हुए हैं। सिक्ख समझते हैं कि पाँच कक्के रखना धर्म है। पर परम पूजनीय सत्गुरु ने बताया है कि उच्च भावों का नाम ही धर्म है। जब उन्होंने एक वकील सरदार गुरुमुख सिंह जी के कन्धे पर हाथ रखकर दर्द भरी अपील की उनके जीवन का कांटा बदल गया। डाक्टर श्री राम जी के जीवन में जो परिवर्तन आया, उसका ब्यान किया। पर सेवा में जो तन मन नहीं लगा सके तो जीवन बर्बाद हो जाता है। कई महान उपकारियों के नाम बताए।

8 – 3 – 2009, शाम 3.00 बजे :– यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने भारत नगर में श्री प्यारा सिंह जी के घर करवाई। उन्होंने बताया कि धर्म प्राप्त किए बिना जीवन बर्बाद होता है। स्वार्थी मनुष्य का जीवन बर्बाद, पशु समान होता है। नशुकरे मनुष्य का जीवन पशुओं से भी निकृष्ट होता है। सरदार सेवा सिंह जी को अपने जीवन की नशुकरेपन की घटना वास्तव रूप में दिखाई। वह उसके लिए अपने छोटे भाई से बार-बार क्षमा याचना करते रहे और उनके साथ उनका सम्बन्ध मधुर हो गया। उसका परिणाम यह हुआ कि छोटे भाई भी उन्हें फरिश्ता समझते और सन्मान देते थे। धर्म प्राप्ति द्वारा पूजनीय भगवान परिवारों में सम्मान पैदा करते हैं। एक उच्च शिक्षा प्राप्त लड़की बड़ी जिज्ञासा के साथ प्रश्न पूछती रही। उसकी माता ने गाए के लिए 100 रू० दान में दिए।

8 – 3 – 2009, शाम 6.00 बजे :– यह सभा गंगानगर साधन स्थान में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई, जिसमें बताया कि नेचर के दो रूप हैं, एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म। सूक्ष्म भी उतना ही प्रभावदायक है, जितना स्थूल। विश्व का प्रत्येक अस्तित्व प्रभाव छोड़ता है, और प्रभाव ग्रहण करता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा इस संसार में ऐसे धर्म अवतार पैदा हुए हैं, जिनके सूक्ष्म देव प्रभाव बहुत अश्चर्यजनक परिवर्तन पैदा करते हैं, जिनके द्वारा अधिकारी आत्मा अपने पापों को अनुभव करते हैं और परिशोध करने के लिए लाचार हो जाते हैं। नशुकरे बच्चे शुक्रगुज़ार सन्तान बन जाते हैं। स्वार्थी जन परोपकारी बन जाते हैं, उदाहरणों द्वारा यह सच्चाई बताने का प्रयत्न किया।

9 – 3 – 2009, सुबह 8.30 बजे :– यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सभा में बताया गया कि मनुष्य के लिए यह अति अवश्यक है कि वह अपने आन्तरिक रूप को जाने। सुकरात इसलिए महान थे कि वह जानते थे कि वह अपने अन्दरूनी रूप को नहीं जानते थे। अपने परिचालक भावों को जानने के लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा की देव ज्योति की हर हालत में अवश्यकता है। हमारे भावों ने हमारे से क्या-क्या गतियां करवाई हैं, इन गतियों के द्वारा हमारा क्या कुछ बना है। इन सब का ज्ञान केवल देव ज्योति द्वारा ही होता है। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसे महान जीवनों को इस ज्योति ने ही रोशन किया है। श्रीमान नौध सिंह जी ने इस ज्योति के द्वारा अपनी नीचता और आगे अपना

सच्चा लक्ष्य देखा। वह फरिश्तों जैसा जीवन जीकर गए।

थराजवाला :– यहां से श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थराजवाला पहुंचे। 5 बजे यहां सभा रखी गई। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने यह सभा करवाई। इसमें उन्होंने बताया कि हम गुरु को विसार देते हैं। गुरू का उपकारी और परम हितकर्ता रूप हमारी आंखों से ओझल हो जाता है। इसलिए बहुत अधिक हानि प्राप्त करते हैं। इस विषय में बहुत सी उदाहरणें पेश करके यह अनुभव कराया गया कि हमें सत्गुरु की सच्ची संगत की किस कदर अवश्यकता है। गुरु को विचार कर जीवन बर्बाद हो जाता है, परिवार उजड़ जाते हैं।

10 – 03 – 2009, सुबह 9.30 बजे :– यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि पशु आंखें रखकर भी नहीं देखते। विद्या क्या है? स्कूल क्या है? अध्यापिक क्या होते हैं? उसी प्रकार मनुष्य नहीं जान सकता कि उच्च संगत क्या है, जीवन क्या है? परम पूजनीय भगवान की संगत ही इस सचाई को दिखाती है कि कौन सी संगत हमें बिगाड़ रही है। सबसे बढ़कर वही सम्बन्धी होता है, तो उच्च जीवन देता है। यह बताया कि जीवन कैसे बनता और बिगड़ता है। पूजनीय भगवान ने ऐसे सम्बन्धी दिए हैं, जिन्होंने बहुत मेहनतें करके उजड़ते हुए जीवनों को बचाया है। ऐसे उपकारियों के उपकारों को श्रीमान जी ने बहुत गहराई से अनुभव किया। फरिश्ता तहसीलदार श्रीमान सावन सिंह जी को क्या से क्या बना दिया, जिन्होंने शिक्षा भी 17 वर्ष की उमर में शुरू की थी। यह सारा ब्यान हृदयों को सरस कर रहा था और गुरु महाराज के चरणों में झुका रहा था।

10 – 3 – 2009 शाम 4.30 बजे :– यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया कि पूजनीय भगवान की ज्योति के बिना मनुष्य अन्धकार में रहते हैं, और बड़े-बड़े पाप करके भी मस्त रहते हैं। स्वाद का सुख ही कई जीवनों को बर्बाद कर देता है। डाक्टरों के मना करने पर भी वह ऐसा खान पान नहीं छोड़ सकते, जिनसे उनकी मृत्यु हो सकती है और हो जाती है। एक-एक स्वार्थी मनुष्य को अपना स्वार्थ नज़र आता है और सेवाकारी बनने के योग्य बनता है। यह करामाते देवात्मा के देव प्रभावों की हैं।

11 – 3 – 2009, सुबह 9.30 बजे :– यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि मनुष्य की जितनी भी समस्याएं है, जितना दुख वा सतांप है, उस सब का कारण यही है कि मनुष्यात्मा रोगी है। आत्मा के रोग मनुष्य को स्वयं नज़र नहीं आते और न उनसे मुक्त हो सकता है। इन आत्मिक रोगों को देखने के लिए जो ज्योति प्राप्त करते हैं, वह उनसे बचने की प्रबल इच्छा करके बचने का संग्राम करते हैं। धन अनुराग, आलस्य अनुराग, स्वाद अनुराग, मोह अनुराग, प्रशंसा, मान, बड़ाई का अनुराग यह सब आत्मिक रोग हैं। इनसे बचना देव प्रभावों द्वारा ही सम्भव है। सबसे बड़ा दुर्भाग्य आत्मिक रोगों में ग्रस्त होना है।

मानसा :– 3 अप्रैल 2009 को श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से रवाना होकर मानसा पहुंचे। यहां डॉ. सुबोध जी गुप्ता, उनके परिवार वा उनकी बड़ी बहनें और बहनोई को मिले और एक सभा करवाई। उसमें बताया गया कि जैसे पुरानी दवाईयां बदल गई है, और दवाईयों में इन्कलाब आ गया है,

उसी प्रकार गुरु महाराज ने नई सचाईयां प्रगट की हैं। उन्होंने बताया कि प्रत्येक मनुष्य रोगी है और हानि उठा रहा है। दुख, नाश उठा रहा है और अन्धकार ग्रस्त है। देवात्मा उन रोगों का ज्ञान देते हैं और उनसे बचाते हैं, इसलिए उनके साथ जुड़े रहना अवश्यक है।

सब बहुत खुश हुए, अखबारों का चन्दा और बहन भाईयों ने 500 - 500 रूपये दान में दिए।

वहां से श्रीमान जी सरसा पहुंचे और मलेका गए। मलेका (सिरसा) वह देव धर्म मिशन के मन्दिर में श्रीमान जी ठहरे और वहां सभा की गई, इसमें 40 - 45 के करीब जन पहुंचे। गुरुदेव राज जी ने भजन गाए। सभा में बताया गया कि हमें हमारे चौतरफा हालात प्रभावित करते हैं। हमारी कदरें कीमतें उसी प्रकार बन जाती है। वही हमारा लक्ष्य बन जाता है। पूजनीय भगवान अपनी शिक्षा और प्रभावों से उच्च कोटि का वातावरण प्रदान करते हैं, इसमें मनुष्य का भला निहित है। इस वातावरण से परे जाकर मनुष्य की बहुत हानि होती है। उदाहरणों द्वारा इस वातावरण की महानता को प्रगट किया गया।

4 – 4 – 2009 सुबह की सभा इस सभा में यह प्रश्न किया गया कि हम यहां क्यों इकट्ठे क्यों हुए हैं? उत्तर मिला, धर्म प्राप्ति के लिए। धर्म पाने की क्यों अवश्यकता है। उत्तर मिला कि दुख, हानि से बचने और बुराई को नष्ट करने के लिए। फिर प्रश्न किया गया कि धर्म क्या है? उत्तर मिला :- धर्म नाम है अच्छे बनने का, उच्च जीवन पाने का उच्च जीवन कैसे मिलता है? उत्तर मिला अच्छे व्यवहारों से।

ईमानदार बनना अच्छे बनना है। ईमानदारी का महत्त्व बताया गया। गुरु महाराज ईमानदार जन पैदा करते हैं। उदाहरण दिए गए और ईमानदार बनने की प्रबल प्रेरणा दी गई।

रात 8.30 बजे एक सभा की गई। इसमें बताया गया कि संसार में धर्मों की भरमार है, पर साथ ही पाप और बुराई की बहुतायत है। इससे करोड़ों मनुष्य गरक हो रहे हैं। इसके उदाहरण दिए गए। गुरु महाराज ने देखा कि बेशुमार मनुष्य सुखों के पीछे भागकर पापों और बुराईयों में गरक हो रहे हैं। बहुत सारे धर्म इसमें कुछ भी सहायक नहीं हो रहे। गुरु महाराज ने फरमाया कि सुखों के प्रेम से बचकर ही मनुष्य बच सकते हैं।

गुरु महाराज ने अपनी ज्योति द्वारा मनुष्यों को उनके सुखों की गुलामी को दिखाया है और अपनी शक्ति के द्वारा उनसे मोक्ष दिलवाई है। परिवर्तन के उदाहरणों द्वारा गुरु महाराज की महिमा को बताया गया। सभा बहुत प्रभावशाली थी।

एक सेवक

(बाकी अगले अंक में)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए., (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160036*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts